

रबड़ समाचार बुलेटिन

जुलाई-दिसंबर 2022



जन्मभूमि

सुमित्रानंदन पंत

जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी
जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी!
जिसका गौरव भाल हिमाचल
स्वर्ण धरा हँसती चिर श्यामल
ज्योति मथित गंगा-यमुना जल,
वह जन-जन के हृदय में बसी!

जिसे राम लक्ष्मण और सीता
सजा गए पद धूलि पुनीता,
जहाँ कृष्ण ने गाई गीता
बजा अमर प्राणों में वंशी!

सीता सावित्री सी नारी
उतरी आभा देही प्यारी,
शिला बनी तापस सुकुमारी
जड़ता बनी चेतना सरसी!

शांति निकेतन जहाँ तपोवन
ध्यानावस्थित हो ऋषि मुनि गण
चिद् नभ में करते थे विचरण,
यहाँ सत्य की किरणें बरसीं!

आज युद्ध पीड़ित जग जीवन
पुनः करेगा मंत्रोच्चारण
वह वसुधैव जहाँ कुटुंबकम
उस मुख पर प्रीति विलसी!
जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी,
जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी!

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

कोडियम - 686 002, केरल

पी बी नं.1122

दूरभाष : (0481) 2301231

फैक्स : 91 481 2571480

ई मेल : ol@rubberboard.org.in

वेब साइट : www.rubberboard.org.in



रबड़ समाचार बुलेटिन

जुलाई - दिसंबर 2022 अंक 132

अध्यक्ष

डॉ. सावर धनानिया

कार्यकारी निदेशक

डॉ. के एन राघवन आई आर एस

संपादक

जी सुनील कुमार

सहायक निदेशक (रा भा)

सहायक संपादक

एम श्रीविद्या

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संपादन सहयोग

सिसिली पी एस

हिंदी सहायक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

हमारे अंदर सबसे बड़ी कमी यह है कि हम चीजों के बारे में बात ज्यादा करते हैं और काम कम

- जवाहरलाल नेहरू

मुख पृष्ठ :

रबड़ रूट ट्रेनर पौधा

इस अंक में

बदलते अंदाज़ और नई उम्मीदें	4
इंडिया रबर मीट 2022	5-8
महात्मागांधी और स्वच्छता	9-11
गुजरात में रबड़ खेती का व्यवहार्यता अध्ययन	11-12
शिक्षण के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती संख्या का कारण	13-14
सर्दी के रोगों से बचे रहें	15-19
रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन	20-21
हिंदी पखवाडा समारोह-2022	22
कोट्टयम नराकास की बैठक	23
त्रिपुरा के रबड़ पौधे केरल की मिट्टी में	24-27
राष्ट्र का विकास और भ्रष्टाचार	28-29
रसोई घर	29
सेवानिवृत्तियां	30
हिंदी प्रश्नोत्तरी	31
हिंदी दिवस समारोह	32-37
शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार	38
अमृत बहाते भारत	39



बदलते अंदाज़ और नई उम्मीदें

रबड़ क्षेत्र को नई उम्मीदें जगाते हुए 23 जुलाई को कोची में इंडिया रबर मीट का छठा सत्र संपन्न हुआ। इस बार चर्चा का मुख्य विषय 'सतत् भविष्य के लिए प्राकृतिक रबड़' था। बैठक में भाग लेने वाले सभी विशेषज्ञों ने उन तरीकों के बारे में बात की जो रबड़ क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करने के लिए समान रूप से स्वीकार्य और फायदेमंद हैं। सबसे उल्लेखनीय सामान्य दृष्टिकोण है कि स्थिरता के सभी प्रयास, भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के साथ-साथ आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देने वाले होने चाहिए।

स्थिरता के संबंध में कार्बन क्रेडिट, रबड़ उद्योग और प्राकृतिक रबड़ के दस्ताने के उत्पादन की संभावनाओं पर अधिक चर्चा की गई। इन क्षेत्रों में विकास से अंततः रबड़ उद्योग को ही लाभ होगा। प्राकृतिक संसाधनों के शोषण की रोकथाम से संबंधित स्थिरता मानकों को सभी देशों में लागू किया जा रहा है। रबड़ उत्पादन में आत्मनिर्भरता के उद्देश्य से 'एन.ई.मित्रा' और 'राष्ट्रीय रबड़ मिशन' जैसी परियोजनाओं के साथ आगे बढ़ते समय संबद्ध उद्योगों को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।

जलवायु परिवर्तन पर हाल ही में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों ने कार्बन उत्सर्जन को सीमित करने और इस तरह ग्लोबल वार्मिंग को कम करने का संकल्प लिया। कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए सभी देशों के अपने-अपने दृष्टिकोण हैं। अक्षय ऊर्जा स्रोतों में बदलाव उनमें से एक है। इस तरह उपलब्ध 'कार्बन क्रेडिट' की गणना भी कर सकता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे उपायों

के अलावा भारत अपने प्रयासों से प्राप्त कार्बन क्रेडिट से भी आय अर्जित कर सकता है। कार्बन क्रेडिट के लिए भारत के विभिन्न चैनलों में से एक बागान क्षेत्र है। एक हेक्टेयर रबड़ के बागानों से प्रति वर्ष निकलने वाले कार्बन से दुगुने कार्बन का उपयोग पेड़ प्रकाश संश्लेषण के लिए करते हैं। इस प्रकार पूरे नेगटिव कार्बन क्रेडिट कर सकता है, यही रबड़ के बागानों की सबसे बड़ी संभावना है। इस क्रेडिट का लाभ सीधे कृषकों को मिले, इसके लिए प्रयास करना है। रबड़ क्षेत्र की स्थिरता के लिए यह एक बड़ा लाभ होगा।

पेड़ों को काटकर बेचने पर पुनर्रोपण के लिए आवश्यक खर्च की लागत पूरी नहीं होती है, जिससे कृषक परेशान हैं। रबड़ काष्ठ के प्रसंस्करण और फर्नीचर निर्माण में और अधिक तकनीक हासिल करने का प्रयास अभी होना है। मलेशिया में रबड़ काष्ठ उद्योग में काफी प्रगति हुई है। उम्मीद है कि बैठक में वहां के विशेषज्ञों की भागीदारी से काष्ठ उद्योग क्षेत्र में आवश्यक प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान में सुविधा होगी।

नए उपायों को लागू करके रबड़ उद्योग को बनाए रखने में और इस प्रकार अतिरिक्त आय अर्जित करने वाले कृषकों के अनुभव वर्णन इस वर्ष की बैठक का एक अन्य आकर्षण है। अंतराफसलन, उत्पाद निर्माण, सामूहिक रबड़ प्रसंस्करण, उत्पादन लागत कम करना, उद्यमिता आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों के इस तरह की खोज धारणीयता की दिशा में प्रयासों को सुगम बनाएंगे। याद रखिए कि नए दृष्टिकोण का साझा करें और जो संगत है, उसे लागू करने के प्रयास करते रहना चाहिए।

डॉ. के एन राघवन आई आर एस
कार्यकारी निदेशक



इंडिया रबर मीट 2022

प्राकृतिक रबड़ का घाटा पूरा करने के लिए टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल योजनाएं आवश्यक हैं - सतीश शर्मा

प्राकृतिक रबड़ की मांग तेज़ी से बढ़ रही है और देश में रबड़ का उत्पादन और उपभोग के बीच के अंतर को कम करने के लिए टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल योजनाओं की आवश्यकता है, श्री सतीश शर्मा, अध्यक्ष, ऑटोमोटिव टायर मैनुफ़ैक्चर्स एसोसिएशन (ए टी एम ए) ने कहा। वे कोची के ले मेरिडियन कन्वेंशन सेंटर में आयोजित **इंडिया रबर मीट 2022**

के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे। टायर उद्योग क्षेत्र तेज़ी से बदलाव के दौर से गुजर रहा है। **'चक्रीय अर्थव्यवस्था'** (सर्कुलर इकनोमी) देश में निर्णायक महत्व और स्पष्ट रूप से नियोजित प्रकृति ग्रहण कर ली है। स्थिरता से संबंधित चुनौतियों का सामूहिक रूप से सामना करने के लिए उत्पादकों के साथ-साथ उद्योग क्षेत्र भी आगे आया है। उन्होंने

बताया कि रबड़ बोर्ड और आत्मा (ए टी एम ए) द्वारा संयुक्त रूप से उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ की खेती के विकास हेतु लागू की जा रही **एन ई मित्रा** नामक एक अलग और अनूठी परियोजना किसानों की मदद करने के लिए उद्योग क्षेत्र के प्रयासों का हिस्सा है।

रबड़ बोर्ड की स्थापना के 75वें वर्ष में आजादी की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में देश में अमृतोत्सव मनाया जाता है। इसी अवसर पर प्राकृतिक रबड़ के मामले में राष्ट्र को टिकाऊ और आत्मनिर्भर बनाने का बोर्ड का प्रयास जारी है, डॉ सावर धनानिया, अध्यक्ष, रबड़ बोर्ड ने बताया। उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करके बोल रहे थे वे।

हालांकि रबड़ क्षेत्र कोविड महामारी के कारण हुए नुकसान से प्रभावित हुआ है, लेकिन थोड़े ही समय में उससे बच जाने और सामान्य स्थिति में आने में हम सक्षम हुए हैं, आई आर एम 2022 के आयोजन समिति के अध्यक्ष और रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक डॉ. के एन राघवन, आई आर एस ने बताया। लोगों और सामानों की आवाजाही बाधित होने के दिनों में जुड़े रहने और क्रय-विक्रय में आने वाली बाधाओं को हल करने में हमने डिजिटल तकनीकों के महत्व को महसूस किया। रबड़ क्षेत्र को आने वाली पीढ़ियों के लिए टिकाऊ बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने यह भी

उल्लेख किया कि हमें प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा के महत्व को समझना है। आईआरएम 2022 आयोजन समिति के उपाध्यक्ष विनोद टी. साइमन ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

उद्घाटन समारोह के बाद 'रबड़ क्षेत्र में धारणीयता', 'विशेष अनुप्रयोगों के रास्ते' और 'रबड़ उत्पाद विनिर्माण में चुनौतियां और अवसर', आदि विषयों पर आधारित विविध सत्र में डॉ. जॉन बॉफ्स, आर.बी. प्रेमदासा (महासचिव, प्राकृतिक रबड़ उत्पादक देशों के संघ, कुआलालंपुर), डॉ. अब्दुल अजीज एस ए कादिर (महासचिव, अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अनुसंधान और विकास बोर्ड, कुआलालंपुर), डॉ. के.एन. राघवन आई.आर.एस. (कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड), डॉ. लक्ष्मी नायर (अर्थशास्त्र और सांख्यिकी प्रमुख, इंटरनेशनल रबड़ अध्ययन ग्रुप, सिंगापुर), डॉ. एस सुब्रह्मण्यम (अध्यक्ष, मलेशियन रबड़ ग्लोव मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन), गजेंद्र सिंह सरीन (अध्यक्ष और सीईओ, ओमनी यूनाइटेड प्राइवेट लिमिटेड, सिंगापुर), दातो जलालुद्दीन हारून (पूर्व महानिदेशक, मलेशियन टिम्बर इंडस्ट्री बोर्ड), डॉ आर मुखोपाध्याय (निदेशक एवं सी ई ओ, हरि शंकर सिंघानिया इलास्टोमेर एंड टायर रिसर्च इंस्टीट्यूट और निदेशक, अनुसंधान एवं विकास, जे के टायर्स एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मैसूर), आल्विन सामुअल (उपाध्यक्ष, बिज़िनस



वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुधार होगा

- डॉ जॉन बॉफ्स



डॉ जॉन बॉफ्स, वरिष्ठ कृषि अर्थशास्त्री, डिवलेपमेंट इकनॉमिक्स प्रोस्पेक्टस ग्रुप, विश्व बैंक ने कहा कि इस साल वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में सुधार की उम्मीद है। कोची में आयोजित इंडिया रबर मीट 2022 सम्मेलन में 'रबड़ क्षेत्र की धारणीयता' सत्र में बोल रहे थे वे। इस वित्त वर्ष के लिए प्रत्याशित वृद्धि 2.9 प्रतिशत है। जनवरी 2022 में आर्थिक विकास 4.1 प्रतिशत रहने की उम्मीद थी। वर्तमान वैश्विक मूल्यवृद्धि 2023 में भी जारी रहने की संभावना है। महामारी के समय में ही युक्रेन युद्ध का प्रभाव ईंधन, भोजन, उर्वरक आदि जैसी कई वस्तुओं की आपूर्ति में बाधा का कारण बना। आवश्यक वस्तुओं की कीमतें इस वित्त वर्ष के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में अधिक रहने की संभावना है। गैर ऊर्जा वस्तुओं की कीमतें विशेष रूप से रूस और युक्रेन से निर्यात करने वाली चीजों की कीमतें 2022 में 20 प्रतिशत तक बढ़ सकती हैं। इन समीक्षाओं की वैधता इस बात पर निर्भर करेगी कि रूस-युक्रेन युद्ध कितने समय तक चलता है और माल की आपूर्ति में होने वाली बाधाएँ कितनी गंभीर होंगी। चीन में लॉकडाउन ने भी औद्योगिक सामग्रियों की मांग और आपूर्ति में बदलाव में बड़ी भूमिका निभाई है। जॉन बॉफ्स ने कहा कि खाने पीने की चीजों और ईंधन के दामों में बढ़ोत्तरी से होने वाली परेशानियों को झेलने वाले आम लोगों की मदद करने के लिए लचीली योजनाएँ होनी चाहिए।

डेवलपमेंट, टेक्सी रिसर्च, मुंबई) ने आलेख प्रस्तुत किए। शीला तोमस आईएस (अध्यक्ष केरला रबड़ लिमिटेड), राजेंद्र गांधी (प्रबंध निदेशक, जी.आर.पी लिमिटेड) ने क्रमशः 'रबड़ क्षेत्र में स्थिरता' और 'रबड़ उत्पाद निर्माण में चुनौतियाँ और अवसर' पर सत्रों की अध्यक्षता की।

कृत्रिम रबड़ के बजाय प्राकृतिक रबड़ का उपयोग करके दस्ताने निर्माण क्षेत्र को अधिक टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल बनाने में भारत

के दस्ताने विनिर्माता प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं, 'विशेष अनुप्रयोगों के रास्ते' विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए डॉ. एस सुब्रह्मण्यम अध्यक्ष, मलेशियन रबड़ ग्लोव मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ने कहा। वर्ष 2022 में दस्तानों की मांग करीब सौ करोड़ होने की उम्मीद है। दस्ताने का उपयोग सालाना 12 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। अत्यधिक आबादी वाले देशों में दस्ताने का प्रति व्यक्ति उपयोग अभी भी बहुत कम है और इसलिए दस्ताने निर्माण क्षेत्र में

शानदार वृद्धि की उम्मीद कर सकते हैं, डॉ. एस सुब्रह्मण्यम ने कहा। श्री एन पी चेरियान (अध्यक्ष, उपासी) ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

डाटा परिवर्तन के क्षेत्र में नई प्रवृत्तियां नए व्यापार मॉडल के उद्भव का कारण बना है। केरल यूनिवर्सिटी ऑफ डिजिटल साइंसेज, इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी के कुलपति डॉ. सजी गोपीनाथ ने कहा कि इससे अधिक उपयोगितावादी और एक अलग प्रबंधन संस्कृति का निर्माण कर सकता है। रबड़ विपणन क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ब्लॉक चेन जैसी तकनीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के तरीकों पर रबर मीट में बोल रहे थे वे।

‘सप्लाई चेन स्ट्रैटेजीज’ विषय पर राजीव बुद्धराजा (महानिदेशक, ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन), दीपा अग्रवाल (मुख्य प्रतिनिधि, एसजीएक्स इंडिया संपर्क कार्यालय, मुंबई) और जेराल्ड टैन (मुख्य कार्यकारी अधिकारी, हीविया कनेक्ट प्राइवेट लिमिटेड, सिंगापुर) आदि ने लेख प्रस्तुत किए। श्री सतीश एब्रहाम (अध्यक्ष, लाटेक्स प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन) ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

रबड़ कृषकों की उद्यमशीलता के प्रयास और विचार सम्मिलित ‘सस्टेनबल फार्मिंग प्राकटीस एंड इन्नोवेशन्स’ नामक सत्र में डॉ. ए.के. कृष्णकुमार (पूर्व रबड़ उत्पादन आयुक्त और इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के पूर्व सलाहकार) मॉडरेटर थे। सुब्रज्योति पॉल, अगरतला, त्रिपुरा (जड़ी बूटी); सेबास्ट्यन मणिमला, कण्णूर (क्राउन बडिंग), जोबी सेबास्ट्यन, कोतमंगलम (कृषि उद्यमिता); जोमी मात्यु, शिमोगा, कर्नाटक (कृषि उद्यमिता); देबेंद्रनाथ, अध्यक्ष, केंडुगडी रबड़ उत्पादक संघ, ओडिशा (उत्पाद विनिर्माण); के.एम. चिन्मयन, पाला (प्रक्षेत्र में मशीनीकरण); अशोक नाथ, अगिया, असम (एन ई मित्रा, रबड़ कृषि विकास योजना) आदि ने आलेख पेश किए।

रबड़ से संबंधित विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों

की भागीदारी के साथ ‘विशन 2048’ पैनल चर्चा में डॉ. के एन राघवन आई. आर. एस. (कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड) मॉडरेटर थे। आर रूपेश (संयोजक, सप्लाई चेइन एंड रिसोर्सस ग्रुप ऑफ ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन), डॉ. सेबास्ट्यन तोमस (नोडल अधिकारी, केरला रबर लिमिटेड), संतोष कुमार (उपाध्यक्ष, हैरिसन मलयालम लिमिटेड), अनिल वासु (उप महाप्रबंधक, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन), जेड्मस तोमस (महाप्रबंधक, सेंट मैरीस रबर्स प्राइवेट लिमिटेड) और अरुण कपूर (तकनीकी सलाहकार, टिना रबर एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड) आदि पैनल चर्चा में भाग लिये।

बैठक का आयोजन इंडिया रबर मीट फोरम (आईआरएमएफ) द्वारा किया गया था, जिसमें रबड़ बोर्ड और रबड़ क्षेत्र के प्रमुख संगठन सदस्य के रूप में पंजीकृत हैं। डॉ. के.एन. राघवन आई.आर.एस., कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर गठित आयोजन समिति ने आई आर एम 2022 के आयोजन से संबंधित संचालन का समन्वय कार्य किया। छोटे और बड़े कृषक प्रतिनिधि, रबड़ प्रसंस्करण क्षेत्र और व्यापार क्षेत्र के प्रतिनिधि, टायर और टायर इतर क्षेत्र के प्रतिनिधि, वाहन संघटक विनिर्माता, निर्यात के क्षेत्र के लोग, खोज-कौशल विकास संस्थाओं के लोग और रबड़ से जुड़े माध्यमों में कार्य करने वाले भी समिति में सदस्य हैं। द्विवार्षिक रूप से आयोजित करने वाले सम्मेलन में छठा सम्मेलन कोची में आयोजित किया गया था।

आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ के एन राघवन ने बताया कि इंडिया रबर मीट 2024 का सातवां सम्मेलन गुवाहाटी में आयोजित किया जाएगा। रबर मीट के समापन समारोह में आई आर एम 2022 के आयोजन समिति उपाध्यक्ष श्री विनोद टी सैमण ने कृतज्ञता ज्ञापित की।



महात्मागांधी और स्वच्छता

भारत देश किसी जमाने में सोने की चिड़िया कही जाती थी और अपनी संस्कृति के लिए जाना जाता था लेकिन समय के बदलाव के चलते हमारे देश पर कई बाहरी ताकतों ने राज किया जिससे हमारे देश की हालत खराब हो गई और देश की स्वच्छता पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। हमारे देश का कोई बड़ा राज्य, शहर, गाँव या फिर मोहल्ला हो वहाँ पर भी कूड़ा करकट मिलेगा। हमारे देश के विकास में बाधा पहुंचाने वाली समस्याओं में एक मुख्य कारण गंदगी है। गंदगी का प्रमुख कारण फैक्टरियों का अपशिष्ट, कूड़ा करकट, गंदे नाल और घरेलू अपशिष्ट जो सडकों पर इतना ज्यादा मात्रा में पाया जाता है सडक दिखाई नहीं देती है और केवल दिखाई देता है तो सिर्फ कूड़ा करकट।

स्वच्छ भारत अभियान का परिचय

स्वच्छ भारत अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रमोदी ने महात्मा गांधीजी की 145 वीं जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को किया। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए उन्हें स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। गांधीजी का सपना था कि हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वस्थ व स्वच्छ दिखाई दे। नरेंद्र मोदी ने कहा देश की सफाई एक मात्र साफ सफाई, कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है। क्या इसमें देश



ब्रजेश कुमार मेहरा
वैज्ञानिक सहायक
प्रा अ स्टे अगर्तला

के नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है? हमें इस मानसिकता को बदलना होगा। उन्होंने स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए दिल्ली की एक वाल्मीकि बस्ती में सडकों पर झाड़ू लगाई। जिससे देश के लोगों में जागरूकता लाई जा सके कि जब एक प्रधानमंत्री झाड़ू लगा सकता है हमें क्यों नहीं।

स्वच्छ भारत से जुड़ा महात्मा गाँधी का सपना

महात्मा गाँधी जी ने भारत को एक निर्मल एवं स्वच्छ देश बनाने का सपना देखा था। उन्होंने कहा था कि स्वच्छता स्वतंत्रता से भी ज्यादा जरूरी है क्योंकि स्वच्छता ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का एक अनिवार्य भाग है।

स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है इस उद्देश्य को पाने के लिए प्रधानमंत्री जी ने 5 साल की योजना बनाई थी जिसके लक्ष्य निम्नलिखित हैं।

- 1) प्रथम उद्देश्य है देश का कोना कोना साफ सुथरा हो।
- 2) लोगों को बाहर खुले में शौच करने से रोका जाए।
- 3) भारत के हर शहर और ग्रामीण इलाकों के घर में शौचालय का निर्माण करवाया जाए।
- 4) हर गली में कम से कम एक कचरा पात्र लगाया जाए।
- 5) लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत

सामूहिक शौचालय का निर्माण करवाया जाए।
6) सभी में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करना।

स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता

हमारे भारत को स्वच्छ बनाने की आवश्यकता क्यों है उसके प्रमुख कारण निम्न हैं।

- 1) हमारे देश के हर शहर, हर गाँव, हर एक गली में कूड़े करकट व गंदगी से भरी पड़ी है।
- 2) देश के गाँवों में शौचालय नहीं होने के कारण लोग आज भी खुले में शौच करने जाते हैं।
- 3) हमारे आसपास के सभी नदी नाले में भी कचरा रहता है, जिनमें पानी की जगह कचरा बहता है।
- 4) इस कचरे के कारण हमारे साथ-साथ जीव जंतु को नुकसान होता है साथ ही पृथ्वी भी प्रदूषित होती है।

देश के स्वच्छ न होने के कारण

हमारे देश का स्वच्छ नहीं होने कारणों में सबसे पहला कारण आप और हम लोग हैं क्योंकि गंदगी मनुष्य जाति द्वारा ही फैलायी जाती है। कूड़ा करकट हम फेंकते हैं और दूसरों पर इल्जाम लगाते हैं। और भी कई कारण हैं जैसे - शिक्षा का अभाव, खराब मानसिकता, घरों में शौचालय नहीं होना, अत्यधिक जनसंख्या, सार्वजनिक शौचालय का अभाव, कचरे का सही निस्तारण का अभाव, उद्योगों का अपशिष्ट पदार्थ आदि।

देश को स्वच्छ रखने के उपाय

हमारे देश को साफ और स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी हम स्वयं, सभी को लेनी होगी। जब तक खुद लोग जागरूक नहीं होंगे तब तक देश की सफाई करना नामुमकिन है। फिर भी हमें निम्न प्रयास करना चाहिए।

- 1) हर घर में शौचालय बनवाये जाए।
- 2) हर शहर, हर गाँव में सार्वजनिक स्थलों पर शौचालयों का निर्माण करवाना चाहिए।
- 3) लोगों में साफ-सफाई के प्रति जागरूकता फैलाना।
- 4) जगह जगह पर कचरा पात्रों का निर्माण करना।

- 5) शिक्षा के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देना।
- 6) लोगों की मानसिकता साफ-सफाई के प्रति बढ़ावा देना व गांव-गांव को पहुंचाना।

स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय

गाँवों व शहरी विकास, साफ-सफाई के लिए विभिन्न मंत्रालय शामिल किये गये जो समय समय पर इस कार्य, योजना की निगरानी रखते हैं और कार्य करते हैं जैसे -

शहरी विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, पेय जल और स्वच्छता मंत्रालय तथा राज्य सरकारें और गैर सरकारी संगठन।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए चुने गए प्रभावी व्यक्ति

इस अभियान को चलाने, जारी रखने, व लोगों में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार ने कई नामचीन हस्तियों, प्रभावी व्यक्तियों को चुना। जिनका काम अपने अपने क्षेत्र में लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है। जैसे सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, बाबा रामदेव, तारक मेहता के उल्टा चश्मा की टीम, मृदुला सिंहा, सलमान खान, शशि थरूर आदि।

स्वच्छ भारत अभियान आज हर गाँव, शहरी इलाके, कार्यालयों, स्कूलों, उद्योगों में चलाया जा रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य अपने आस-पास की सफाई करना है।

स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय

इसके अंतर्गत विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ की गई जो निम्न प्रकार से हैं।

- 1) स्कूल में कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों से साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे में विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करना
- 2) कक्षा, प्रयोगशाला और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना
- 3) शौचालयों और पीने के पानी वाले क्षेत्रों की सफाई करना
- 4) खेल के मैदान की सफाई करना
- 5) स्कूल भवनों का वार्षिक रखरखाव, रंगाई



गुजरात में रबड़ खेती का व्यवहार्यता अध्ययन

प्राकृतिक रबड़ के उत्पादन में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से रबड़ बोर्ड रबड़ की खेती का विस्तार करने और रबड़ बागानों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जोरदार प्रयास कर रहा है। जहां तक किसी भी देश का संबंध है, प्राकृतिक रबड़ एक महत्वपूर्ण औद्योगिक वस्तु है। प्राकृतिक रबड़ लगभग 40,000 उत्पादों के निर्माण के लिए उपयुक्त है, जो देश के आर्थिक और व्यावसायिक विकास के लिए अपरिहार्य हैं। पिछले एक दशक से देश

में प्राकृतिक रबड़ का उपभोग काफी बढ़ रहा है। औद्योगिक विकास, विशेष रूप से टायर क्षेत्र में रबड़ के बढ़ते उपभोग ने उत्पादन और उपभोग के बीच के अंतर को चौड़ा कर दिया और रबड़ के आयात में वृद्धि हुई। 2021-22 के दौरान हमने 7500 करोड़ रुपए के रबड़ का आयात किया है।

आंकड़ों के अनुसार भारत में प्राकृतिक रबड़ का उत्पादन, उपभोग का लगभग 65 प्रतिशत ही है। वित्त वर्ष 2021-22 में रबड़

एवं जुताई

- 6) स्कूल के बगीचों की साफ-सफाई एवं रख रखाव
- 7) निबंध, वाद विवाद, चित्रकला, सफाई और स्वच्छता पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करना
- 8) सभी बच्चों को साफ-सुथरे पोशाक पहनने के लिए प्रेरित करना
- 9) स्वच्छता के संबंध में वाद विवाद और नाटकों की प्रतियोगिता का आयोजन करना आदि।

उपसंहार

महात्मा गांधी ने कहा था कि जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं वह सबसे

पहले अपने आप में लागू करें। महात्मा गांधी के ये शब्द स्वच्छता पर आधारित थे। उनके अनुसार स्वच्छता की जागरूकता की मशाल सभी में पैदा होनी चाहिए। इसके तहत ही यह अभियान चलाया गया। स्वच्छता से हमारा तन और मन दोनों साफ होते हैं। “जहाँ मन साफ होता है वहाँ ईश्वर निवास करते हैं” ऐसा हमारे बड़े बुजुर्ग कहते हैं तो आओ हम सब मिलकर आज यह प्रण लेते हैं कि हम इस अभियान को जारी रखेंगे जब तक हमारा भारत पूर्ण स्वच्छ न बन जाए।

अखिल भारतीय रबड़ बोर्ड निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त निबंध



का उपभोग 12,38,000 टन था जबकि उत्पादन महज 7,75,000 टन था। उत्पादन में इस कमी को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भर रहना केवल एक अस्थायी समाधान है। स्वाभाविक है कि तेजी से आर्थिक विकास की ओर बढ़ रहे भारत जैसे देश में भविष्य में रबड़ का उपभोग बढ़ेगा।

केरल और तमिलनाडु जैसे पारंपरिक रबड़ क्षेत्र में और खेती के लिए जगह की उपलब्धता कम हो गई है। इतना ही नहीं श्रमिकों की उपलब्धता की कमी और बढ़ती मज़दूरी की वजह से ज्यादातर लोग इन क्षेत्रों में रबड़ की खेती करने के लिए आगे आने से हिचक रहे हैं। यहां रबड़ की खेती का व्यापक विस्तार व्यावहारिक नहीं है। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में ये समस्याएँ अपेक्षाकृत कम हैं। इन राज्यों में रबड़ की खेती का विस्तार करने के लिए रबड़ बोर्ड ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) के सहयोग से 10 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में खेती शुरू करने का निर्णय लिया गया है और इसकी गतिविधियाँ प्रगति पर हैं। इसके साथ ही वर्तमान में रबड़ की कृषि नहीं होती है लेकिन इसकी संभावना वाली इलाकों में व्यवहार्यता अध्ययन भविष्य में

रबड़ कृषि को और विकसित करने के रबड़ मिशन की पहल है।

इसके हिस्से के रूप में, दक्षिण गुजरात क्षेत्र में रबड़ की खेती की संभाव्यता का आकलन करने के लिए 5 जुलाई, 2022 को रबड़ बोर्ड और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। विश्वविद्यालय के पेरिया (जलरिसामा) फार्म में एक हेक्टेयर में रबड़ बागान स्थापित किया जाएगा और क्षेत्र में विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों का आकलन करने के लिए विश्वविद्यालय के 13 अनुसंधान फार्मों पर परीक्षण शुरू किए जाएंगे। इसकी शुरुआत के रूप में ही 'पेरिया' फार्म में रबड़ पौधों की खेती शुरू कर दी गई है।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. जेस्सी एम डी और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय (एनएयू), गुजरात के निदेशक अनुसंधान डॉ. टी आर आह्लावत ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक डॉ. के.एन. राघवन, आई आर एस, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एज़ेड पी. पटेल भी मौजूद थे।

शिक्षण के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती संख्या का कारण

नवीन युग में महिलाएँ सभी क्षेत्र में पुरुषों के साथ-साथ कंधे मिलाकर चल रही हैं। सालों पहले कई ऐसे क्षेत्र थे जो केवल पुरुष वर्ग द्वारा चलाया जाता था। भारत में शिक्षण के लिए गुरुकुल परंपरा सबसे पुरानी व्यवस्था है, जहां गुरु की भूमिका केवल पुरुष के हाथ में थी। धीरे-धीरे नारी शिक्षित होने लगी और अपने परिवार या अपनी अर्थव्यवस्था उदारीकरण के लिए काम करना शुरू किया।

पढी लिखी महिलाएं शिक्षण क्षेत्र अपने लिए अधिक उपयुक्त मानने लगी और समाज भी इस के साथ सहयोग दिलाने लगा। नारी की गुणवत्ता ही उसे इस क्षेत्र में नर से अधिक होने का कारण बन गया। सहानुभूति, सहनशीलता और भावनात्मक गुण जन्म से ही उन्हें प्राप्त है। ये नैतिक गुण महिलाओं को शिक्षक के रूप में पुरुष से अधिक सुसज्जित बनाती है।

छोटे बालक या बालिका अपने घर से स्कूल में



मंजुला एम
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
मुख्यालय

आते हैं तो उन्हें घर की हालत महसूस करने के लिए अध्यापिका की जरूरत पडती है। वे अपने छात्रों की रुचि, जिज्ञासा, भावना, क्षमता आदि को जल्द और ठीक रूप से समझती हैं। छात्र को स्कूल दूसरा घर लगने के लिए शिक्षक का यही गुण काम आता है।

बाल मनोविज्ञान नर से अधिक नारी ही समझती है। पढने के लिए रुचि होना आवश्यक है, रुचि होने पर विषय जानने और प्यार से विषय को प्रस्तुत करने से सुनने वाले जल्दी ग्रहण कर लेते हैं।

अच्छे शिक्षण की प्रमुख विशेषता आदेशात्मक नहीं बल्कि निदेशात्मक होने के साथ-साथ प्रेरणादायक भी होना है। ये गुण ज्यादातर महिलाओं को ही होता है। औरत मर्द से ज्यादा क्षमाशील होने के कारण छात्र को दोहराते हुए संदेह दूर करने में ज्यादा काबिल होती है।

नारी को तो अपने परिवार के देखभाल के साथ ही बाहर का काम भी



करना पडता है। यानी परिवार और पेशा एक सिक्के का सिर व पूँछ है। घर में अपने बच्चों का, सांस-ससुर, मां-बाप आदि का उत्तरदायित्व नारी पर है। अध्यापिका की पेशा अपनाने से वह दोनों भूमिका अच्छी तरह से निभा सकती है।

माँ का प्यार दोनों ओर पाने का अवसर स्कूल में मिलता है। उसका हमेशा स्कूल में बच्चों के साथ आपस में बातचीत होने के कारण विद्यालय का सुनहरा दरवाज़ा हर समय खुला रहता है। समाज तो नारी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त पेशा का स्थान तो इसको देता है। आजीविका किसी भी इंसान का जीवनशैली का नेतृत्व करता है। यह जीवन के विभिन्न पहलुओं पर बहुत प्रभाव डालता है। इस दृष्टि से देखने पर शिक्षक की पेशा लड़कियों के लिए वरदायक होता है।

अपने घर के निकट में काम करने के साथ सामाजिक और व्यक्तिगत सुरक्षा भी मिल सकती है।

उपर्युक्त कारणों को नर प्रमुखता नहीं देता हैं, और पेशा चुनने के लिए आर्थिक सुरक्षा को ही प्रमुखता दे बैठता है।

सावित्री बाई फ़ूले नामक महिला भारत की पहली महिला अध्यापिका थी। 1831 में



सावित्री बाई फ़ूले

महाराष्ट्र में जन्मी इस महिला अध्यापिका का नाम हर समय अमर रहेगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार उच्च शिक्षा क्षेत्र में महिलाएं नहीं बल्कि पुरुष वर्ग ज्यादा है। संक्षेप में कहा जाय तो नारी का जन्मसिद्ध गुणवत्ता और पेशे की विशेषताएं ही शिक्षण क्षेत्र में महिलाओं की संख्या बढ़ने का कारण बना है।

रबड़ के रोग नियंत्रण के लिए वाट्स ऐप

रबड़ पेड़ों को होने वाले रोग व कीटों और उनके उपचार के बारे में जानने के लिए आप वाट्स ऐप से संपर्क कर सकते हैं। रबड़ पेड़ों को होने वाले सभी प्रकार के रोग-कीटों को सही समय पर पहचानने और सही उपचार जानकर बागानों में प्रयोग करने के लिए यह सेवा फायदेमंद रहेगी। यदि किसान स्वयं रबड़ के पेड़ों को होने वाले कीटों की पहचान करने में सक्षम नहीं हैं, तो अपने मोबाइल फोन पर और वाट्स ऐप के माध्यम से मोबाइल नंबर : 9496333117 पर चित्रों के साथ रोग की जानकारी भेज देंगे तो अनुसंधान केंद्र के विशेषज्ञ समस्या की पहचान करेंगे और उपचार का सुझाव देंगे। इसके अलावा किसान, कीटों को पहचानने के लिए रबड़ अनुसंधान संस्थान के रबड़ क्लिनिक की सुविधा का इस्तेमाल कर सकते हैं। आपस में विचार विमर्श की सुविधा <http://clinic.rubberboard.org.in> में है।

सर्दी के रोगों से बचे रहें

वर्षा ऋतु समाप्त होने को है। पारंपरिक रबड़ उत्पादक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और बेमौसम बारिश कृषकों के लिए बहुत परेशानी का कारण बन रही है।

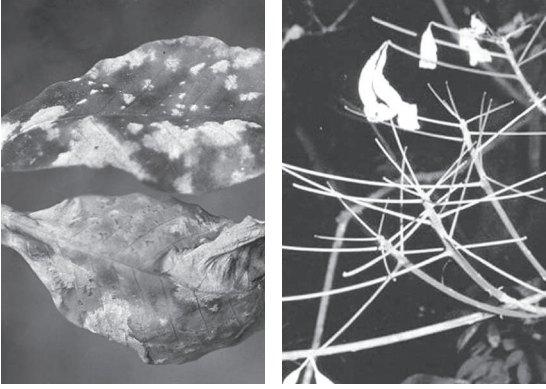
‘लीफ स्पॉट डिजीज’ एक ऐसी बीमारी है, जिसको 2017 से पाया गया है। यह रोग मई से नवंबर के महीनों के दौरान पारंपरिक क्षेत्र (दक्षिण कर्नाटक से कन्याकुमारी तक) में बागानों में पतझड़ का कारण बनता है। असामयिक पत्ती झड़न और ‘लीफ स्पॉट डिजीज’ से प्रभावित बागानों में इस समय के दौरान बहुत कम पत्तियाँ होंगी।

लेकिन, यह देखा जा सकता है कि समय पर निवारक उपाय किए गए छोटे और बड़े बागानों में सभी रबड़ के पेड़ों में नवंबर के महीने तक लगभग 80 प्रतिशत पत्ते बरकरार रहते हैं। असामयिक पत्ती झड़न के विपरीत, लीफ स्पॉट से प्रभावित बगीचों में पेड़ों के ऊपरी भाग में 5 से 10 प्रतिशत पुराने पत्ते मौजूद होते हैं। इसके कारण पेड़ फिर से उग आते हैं। इससे पेड़ों के अंकुरित होने की संभावना कम रहती है। यह पौधों के स्वास्थ्य और उत्पादन को प्रभावित कर सकता है। दिसंबर के अंत से पत्तियों के प्राकृतिक रूप से गिरने और नए पत्तों के उगने का मौसम होगा। चूर्णिल आसिता और कोरिनोस्पोरा इस समय रबड़ के पेड़ की टहनियों को प्रभावित करने वाले मुख्य रोग हैं।

लगातार संक्रमण रबड़ के पेड़ों की वृद्धि और उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। पेड़ तभी मजबूत और उत्पादक होंगे जब वे ढेर सारी पत्तियों के साथ स्वस्थ खड़े होते हैं। इन दोनों बीमारियों और उनके प्रभावी नियंत्रण के तरीकों के बारे में कृषकों को पता होना चाहिए।

चूर्णिल आसिता रोग

चूर्णिल आसिता रोग का कारण ऑइडियम हीविया नामक कवक होता है। यह रोग छोटे



अंकुरों से लेकर बड़े पेड़ों की टहनियों को प्रभावित करता है। प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप से इन कवकों का सृजन नहीं किया जा सकता। ये कवक जीवित पत्तियों पर ही बढ़ते हैं। इस रोग के कारण रबड़ के किस्मों में लगभग 14 से 32 प्रतिशत उपज हानि देखी गई है। नए पत्ते साल भर स्वस्थ रहने से ही पेड़ मज़बूत होते हैं। चूर्णिल आसिता रोग शहद उत्पादन और बीज उत्पादन को प्रभावित करता है।

रोग लक्षण

यह रोग विभिन्न आयु के सभी रबड़ के पेड़ों को प्रभावित करता है। यह रोग टहनियों (गहरे भूरे से हल्के हरे रंग) पर बहुत आम है। मुख्य लक्षण यह है कि फफूंद के बीजाणु सफेद चूर्ण जैसे धब्बों के रूप में पत्ती की सतह पर चिपक जाते हैं। पत्ती का प्राकृतिक हरा रंग खो जाता है। संक्रमित पत्तियाँ झुलस जाती हैं और फिर गिर जाती हैं। पत्तों के डंठल कई दिनों तक पेड़ों पर टूठ की तरह बिना गिरे पड़े रहते हैं। परिपक्व पत्तियाँ नहीं झड़ती हैं बल्कि पत्ते पर विभिन्न आकार के सफेद धब्बे दिखाई देते हैं और ये धब्बे बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं।

रोग की घटना और गंभीरता प्रत्येक क्षेत्र में टहनियाँ बनते समय की जलवायु, स्थान, ऊंचाई, रबड़ की किस्म, पत्तियों की उम्र आदि कारकों पर निर्भर करती है। बादल छाये हुए वातावरण, बूँदाबांदी और बर्फ आदि सभी

चूर्णिल आसिता रोग के लिए अनुकूल कारक हैं। रबड़ के पेड़ों में कलियाँ निकलने के दौरान ये स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, तो संक्रमण और रोग के प्रसार में तेजी आएगी। उच्च ऊंचाई और ढलान वाले क्षेत्रों में उगने वाले रबड़ के पेड़ रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

पहले ही पत्ती झड़न होने वाले रबड़ की किस्म रोग से बचे पाए गए हैं। देर से पत्ती झड़न होने वाले रबड़ के किस्म में रोग का प्रकोप अधिक होता है। रोपण के लिए वर्तमान में अनुशंसित सभी किस्मों में संक्रमित पायी जाती हैं। कभी-कभी देखा गया है कि यह रोग वर्ष में एक या दो बार होता है। तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले केरल के वयनाड, इडुक्की जिले और उत्तर पूर्वी राज्यों में चूर्णिल आसिता रोग प्रचलित है।

प्रतिरक्षा उपाय

बहुत प्रभावी ढंग से चूर्णिल आसिता रोग को नियंत्रित किया जा सकता है। गंधक का लेप रोग निवारण में कारगर होता है। आमतौर पर 70 प्रतिशत गंधक चूर्ण का प्रयोग किया जाता है। अच्छी तरह से सुखाया हुआ और हवा में उड़ने वाला सल्फर पाउडर 325 मेश आकार वाली छलनी से गुजरना चाहिए। एक हेक्टेयर बागान के लिए 11-14 किग्रा गंधक चूर्ण की आवश्यकता होती है। पर्णपाती बागान में, दस प्रतिशत पेड़ों के अंकुरित होने से लेकर पत्तियों के परिपक्व होने तक, एक से दो सप्ताह के अंतराल पर तीन से छह बार सल्फर पाउडर लगाना पड़ेगा। बड़े पेड़ों के लिए एक माइक्रोन डस्टर से सल्फर छिड़कना बेहतर होता है। बागान में डस्टर को चार पंक्ति के अंतराल पर ले जाना चाहिए। एक दिन में औसतन 12 हेक्टेयर भूमि को छिड़का जा सकता है। छिड़काव सुबह सवेरे करना बेहतर है। इस समय, पत्तियाँ गीली होती हैं और हवा नहीं होती है, इसलिए धूल पत्तियों से बेहतर तरीके से चिपक जाता है।

गंधक का छिड़काव हानिकारक नहीं है

चूर्णिल आसिता के खिलाफ बागानों में गंधक का इस्तेमाल कुछ जगहों पर विरोध का कारण बनता है। अध्ययनों से पता चलता है कि इनसे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं होता है। विकसित देशों में जैविक खेती में सल्फर पाउडर का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी कुछ रोगों से बचाव के लिए गंधक चूर्ण वाली औषधियों का प्रयोग करते हैं। प्रातःकाल वृक्षों की पत्तियाँ नम होने के कारण गंधक का चूर्ण पत्तों पर चिपक जाता है। साथ ही इस दौरान हवा भी कम होगी। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि गंधक का छिड़काव सुबह के समय ही करना चाहिए।

सल्फर पाउडर हॉपर में भरते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आग न पकड़ ले। छोटे (14-16 मीटर ऊंचाई) पौधों के छिड़काव हेतु एक व्यक्ति द्वारा पोर्टेबल डस्टर स्टिल एस आर 450 का उपयोग किया जा सकता है।

पौधशालाओं के अंकुरों और नए अंकुरों को 0.02% प्रबलता वाले गंधक (प्रति लिटर 2.5 ग्राम गीला करने योग्य गंधक) का छिड़काव करके रोका जा सकता है।

कार्बेन्डाजिम (0.05 प्रतिशत) नामक कवकनाशी (एक ग्राम/लिटर पानी) के प्रयोग से संक्रमण को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर

सकता है। कार्बन डेसिम और वेटेबल सल्फर के वैकल्पिक छिड़काव को अधिक प्रभावी देखा गया है। यदि उचित निवारक उपाय किए जाएं तो संक्रमण को पूरी तरह से रोका जा सकता है।

कोरिनेस्पोरा पत्ता रोग

रबड़ की टहनियों को प्रभावित करने वाले रोगों में से एक है कोरिनेस्पोरा पत्ता रोग। कोरिनेस्पोरा कैसिकोला नामक कवक इस रोग का कारण होता है। अफ्रीका के सीरालियोन में रबड़ के पौधों में पाया गया यह रोग बहुत मामूली समझा जाता था। बाद में, इस बीमारी ने भारत और अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के



बड़े पेड़ों को व्यापक नुकसान पहुँचाया। श्रीलंका के बागानों में उत्पादकता में सबसे आगे वाली आरआरआईसी 103 नामक किस्म इस रोग के कारण लगभग 4500 हेक्टेयर कृषि भूमि से पूरी तरह से समाप्त हो गई। इससे हम इस बीमारी की गंभीरता को समझ सकते हैं।

कोरिनेस्पोरा रोग पहली बार भारत में 1958 में भारतीय रबड़ अनुसंधान केंद्र के पौधशाला पौधों में पाया गया था। बाद में, यह 1996 में दक्षिण कन्नड़ जिले के नेट्टणा में बड़े पेड़ों में व्यापक रूप से देखा गया था। उसी जिले के शिराडी, नेल्लियाडी, कडबा, एच्चिलंपाडी, उडुप्पी, सुल्ल्या, गुथीगढ, पुत्तूर, कुंदापुरा, जैसे प्रदेशों में केरल के कासरगोड जिले के अडूर, मुल्लेर्या, किण्णिंकार, बदियडुक्का, पांडी, तडिक्कडवु प्रदेशों में, पिछले वर्ष कण्णूर जिला के आलक्कोड, श्रीकंठापुरम प्रदेशों में कोषिक्कोड जिला के तामरशेरी, पत्तनंतिट्टा जिला के कुछ प्रदेशों में और पुनलूर क्षेत्र के बागानों में यह रोग पाया गया है।

रोग लक्षण

यह रोग कोरिनेस्पोरा कवक के अति सूक्ष्म बीजाणुओं द्वारा पत्तियों को नुकसान पहुँचाता है। ये कवक पौधे में प्रवेश करते हैं और फैलते हैं और पौधों में विशेष विषैले पदार्थ छोड़ते हैं। परिणामस्वरूप पत्तियाँ मुरझाकर गिर जाती हैं। इस रोग का आक्रमण अधिकतर टहनियों में देखा जाता है। इसका प्रकोप जनवरी से मार्च-अप्रैल तक रह सकता है। पौधशाला पौधों में और बडवुड पौधशाला में सितंबर से मई तक के महीनों के दौरान रोग बना रहते हुए पाया जाता है।

प्रारंभ में, रोग पत्तियों पर भूरे धब्बों के रूप में प्रकट होता है। वे फिर बड़े हो जाते हैं और एक से दस मिलीमीटर व्यास के गोलाकार धब्बे बन जाते हैं। इन धब्बों के मध्य का रंग हल्का भूरा तथा किनारों का रंग गहरा भूरा होता है।

इन धब्बों के चारों ओर एक पीला घेरा भी बनेगा। कई छोटे धब्बे आपस में मिलकर बड़े धब्बे बन जाते हैं और अनियमित आकार में दिखाई देते हैं। धब्बों के केंद्र का सूखना और छेद बनना भी आम बात है। पीले पत्ते के धब्बे कभी-कभी पत्तियों पर छोटे शंकु जैसे उभरे हुए धब्बों के रूप में देखे जाते हैं। यह इस रोग का एक और लक्षण है। रोग पत्ती की शिराओं तक फैल जाता है और शिराएँ भूरी हो जाती हैं। चूंकि रोग मुख्य नसों और शाखाओं को प्रभावित करता है, तब वे नक्शे पर एक रेलवे लाइन का आकार ले लेते हैं। बाद में पत्तियाँ झड़ जाती हैं। पत्ते पर हल्के कवक के हमले से भी पत्ती झड़न का कारण बन सकता है।

एक ही बागान में रोग संचरण में अंतर देखा गया है। यह रोग ज्यादातर बागान के किनारे के पेड़ों और सीधे सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने वाली शाखाओं में देखा जाता है। गंभीर बीमारी में पौधे का अंकुर सूख जाएंगे। रोग के कारण पत्तियाँ गिरने के बाद, बाद में अंकुरित पत्तियाँ फिर से संक्रमित हो सकती हैं। यह देखने में आया है कि बार-बार संक्रमण के कारण पेड़ सूख रहे हैं। विशेष रूप से, पौधे की ऊपरी शाखाएं या पूरा पेड़ सूख सकता है। उच्च वायुमंडलीय तापमान, बर्फ और गीली सुबह रोग के प्रकोप और प्रसार के लिए अनकूल कारक हैं। अंकुर निकलने के समय उपरोक्त मौसम की स्थिति होने पर किसानों को बागान में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

रबड़ की विभिन्न प्रजातियों और क्षेत्रों में रोग की गंभीरता अलग-अलग होती है। आरआरआईआई 105, जिसकी हमारे देश में व्यापक रूप से खेती की जाती है, सबसे अधिक प्रभावित है। आरआरआईआई 118, पीबी 235, 268, 217 और 311 किस्मों में भी संक्रमण देखा गया है। नई किस्म आरआरआईआई 414 में अपेक्षाकृत अधिक प्रतिरोधक क्षमता है। रोग के लिए पूरी तरह से प्रतिरोधी किस्म अभी तक



विकसित नहीं की है। आरआरआईआई 105 की खेती ज्यादातर हमारे पारंपरिक क्षेत्र के अधिकांश खेतों में की जाती है। एक ही प्रजाति की खेती करने से दूरगामी नुकसान हो सकता है। श्रीलंका का अनुभव इसका उदाहरण है। रोग और फसल क्षति को देखते हुए रबड़ बोर्ड द्वारा बहुक्लॉन प्रणाली की सिफारिश की जाती है। खासकर कण्णूर, कोषिकोड और पत्तनंतिट्टा में आरआरआईआई 105 प्रजातियों में पिछले साल इस बीमारी का प्रकोप देखा गया था। इसलिए किसानों को सावधानी बरतनी चाहिए। पिछले साल रबड़ बोर्ड ने रबड़ उत्पादन विभाग के साथ मिलकर 500 हेक्टेयर में नियंत्रण उपायों को लागू किया था।

रोग नियंत्रण

चूंकि रोग का मौसम जनवरी से अप्रैल तक रहता है, इसलिए कोरीनेस्पोरा के नियंत्रण पर अधिक ध्यान देना चाहिए। पौधशाला पौधे और अपक्वकालीन पेड़ आदि में पत्तियों का मुकुलन और पकना अलग-अलग समय पर होता है। ऐसे

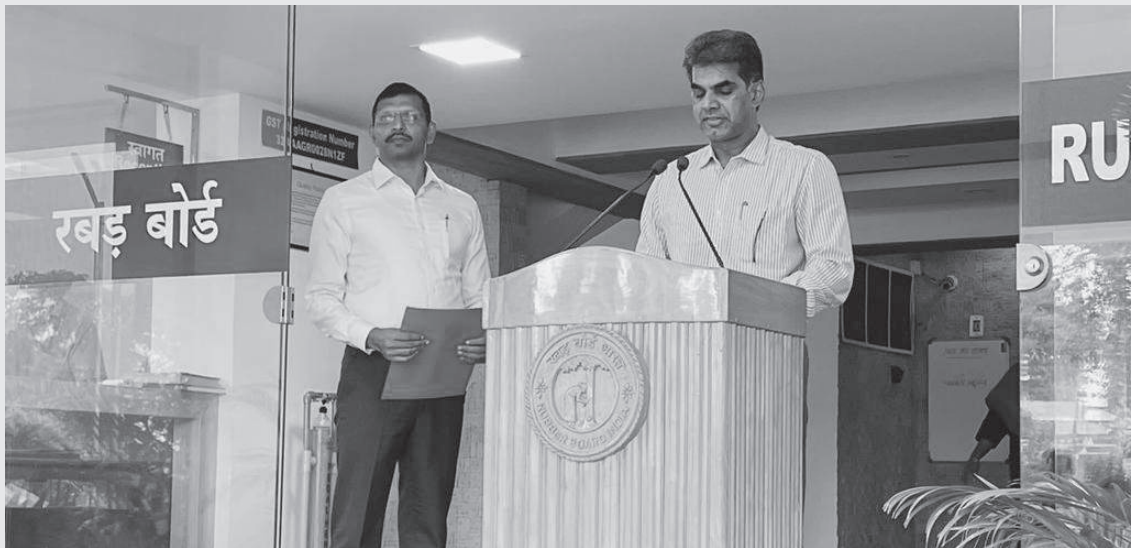
पौधों में केवल एक ही बार औषधि के प्रयोग से रोग नियंत्रण हो पाने की उम्मीद नहीं है। छोटे पौधे और अपक्वकालीन पेड़ों (1 से 4 वर्ष) में पानी में घुलने योग्य कवकनाशी प्रभावी होते हैं। पानी में घुलने वाले कवकनाशी मैनकोज़ेब (0.2 प्रतिशत), कार्बेन्डाजिम (0.05 प्रतिशत) बोर्डोमिश्रण (एक प्रतिशत) आदि में से किसी एक का उपयोग किया जा सकता है।

अनुसंधान विभाग के अध्ययन से साबित हुआ है कि 5 थियोफनाइट मिथाइल (0.07 प्रतिशत) पाइराक्लोस्ट्रोबिनअमेटिराम (0.03 प्रतिशत) आदि रोग नियंत्रण के लिए उपयुक्त है। कवकनाशी का छिड़काव उन जगहों पर पहले से करना चाहिए जहां रोग नियमित रूप से देखा जाता है। कवकनाशी का छिड़काव पंद्रह दिनों के अंतराल पर करना चाहिए। तीन से पांच वर्ष पुराने वृक्षों को प्रति हेक्टेयर 500 से 2000 लिटर कवकनाशी की आवश्यकता होती है। पत्तियों के आधार पर कवकनाशी की मात्रा भिन्न हो सकती है। बैक पैक और रॉकर स्प्रेयर का उपयोग करके औषध का छिड़काव किया जाना चाहिए।

पाँच वर्ष से अधिक पुराने पेड़ों पर जल-आधारित कवकनाशी का प्रयोग कठिन और महंगा है। ऐसे पेड़ों के लिए, तेल आधारित कॉपर कवकनाशी का उपयोग किया जा सकता है। कॉपर ऑक्सीक्लोराइड को 1:5 के अनुपात में कृषि स्प्रे तेल में मिलाकर लंबे पेड़ों पर माइक्रोन स्प्रेयर और छोटे पेड़ों पर मिस्ट स्प्रेयर से छिड़काव करना चाहिए। प्रति हेक्टेयर 30 से 40 लिटर कवकनाशी की आवश्यकता होती है।

कोरिनेस्पोरा सहित विभिन्न बीमारियों के बारे में जानने के लिए, रबड़ बोर्ड के मुख्य कार्यालय के कॉल सेंटर (फोन 0481 2576622), प्रादेशिक कार्यालय, रबड़ अनुसंधान संस्थान के पौधा रोगविज्ञान विभाग (वाट्सएप नंबर 9496333117) पर संपर्क किया जा सकता है।

रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन



केंद्रीय सतर्कता आयोग के मार्गदर्शन पर रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया। इस सिलसिले में स्कूलों और कॉलेजों में बच्चों के लिए सतर्कता जागरूकता से संबंधित विषयों पर भाषण प्रतियोगिता और वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन



के हिस्से के रूप में कोट्टयम शहर में चलाए गए फ्लैशमोब में बीसीएम कॉलेज की छात्राएं भाग लीं। इसके अलावा मैरथॉन/वॉकथॉन में विविध कॉलेजों से छात्र भाग लिए।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह के समापन सत्र का उद्घाटन उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश डॉ सी.एन. रामचंद्रन नायर ने किया। भ्रष्टाचार मुक्त एक सभ्य समूह के सृजन के लिए नई पीढ़ी की सहभागिता अनिवार्य है - केरला के उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश डॉ सी.एन. रामचंद्रन नायर ने कहा। उच्च स्तर से भ्रष्टाचार पहले दूर किया जाना चाहिए। भ्रष्टाचारियों के आर्थिक प्रभुत्व का सम्मान करने वाले और उसे स्वीकार करने वाली संस्कृति को बदलना होगा। नई पीढ़ी की भागीदारी से आयोजित करने वाले सतर्कता जागरूकता सप्ताह भ्रष्टाचार उन्मूलन के सरकार के प्रयासों को मजबूती प्रदान करेगा। डॉ सी.एन. रामचंद्रन नायर ने कहा कि शिक्षित



नई पीढ़ी की उपस्थिति कई क्षेत्रों में भ्रष्टाचार को कम कर रही है।

यदि सरकार, अधिकारी और जनता मिलकर काम करेंगे तो ही सभी क्षेत्रों को संशुद्ध बना सकते हैं, जनता को सक्रिय बना सकते हैं और उसके द्वारा भ्रष्टाचार को खत्म कर सकते हैं, डॉ. के एन राघवन, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने कहा। गलतियों पर

इशारा न करना भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार है। गलती को सही और सही बातों को गलत स्थापित करने की स्थिति में भी परिवर्तन आना चाहिए। डॉ. राघवन ने बताया। श्रीमती पी श्रीविद्या, सहायक सतर्कता अधिकारी ने बैठक में कृतज्ञता ज्ञापित की।

डॉ. के एन राघवन ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किये।

आवरण पृष्ठ (अंतिम) का चित्रकार



नवनीत वी नायर, श्रीमती रतीदेवी सी जी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1, रबड़ बोर्ड, मूवाट्टुपुषा का सुपुत्र है और विश्वज्योति कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलोजी, वाषक्कुलम, एरणाकुलम जिला में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डाटा साइन्स के बी टेक अंतिम वर्ष का छात्र है। उन्होंने चित्र रचना में अपनी प्रवीणता कई रचनाओं से साबित की है। एक अनोखी रचना याने ए4 कागज़ में 2560 फलों का चित्रण है। उसके लिए उन्हें इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड, यूनिवर्सल रिकॉर्ड फोरम ने सम्मानित किया है। हाल के दिनों में (अक्तूबर 2023) मलेशिया के

कुआलालंपुर में संपन्न इमेज प्रोसेसिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आई ई ई ई (IEEE) पाँच मिनट वीडियो क्लिप प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

हिंदी पखवाडा समारोह-2022

संघ की राजभाषा नीति अमल में लाने के लक्ष्य से रबड़ बोर्ड में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी सिलसिले में हर वर्ष बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान एवं राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी पखवाडा समारोह का तथा बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2022 के दौरान भी बोर्ड के कार्यालयों में हिंदी पखवाडा समारोह एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

वर्ष के दौरान हिंदी दिवस का उद्घाटन अखिल भारतीय स्तर पर 14 सितंबर को गुजरात के सूरत में संपन्न हुआ था। सम्मेलन का उद्घाटन श्री अमित शाह, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय इन्डोर स्टेडियम,

सूरत गुजरात में किया गया। रबड़ बोर्ड से श्री सुनीलकुमार जी, सहायक निदेशक (रा भा) समारोह में उपस्थित थे। पखवाडे के दौरान मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। सभी पदधारियों को शामिल कराने के उद्देश्य से हर दिन टिप्पणी लेखन और हिंदी गीत लेखन प्रतियोगिताएं भी आयोजित की थीं। अधिक से अधिक प्रतिभागियों को इनमें शामिल कराने का भी प्रयास किया गया। इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान से करीब 300 पदधारी भाग लिये। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में बोर्ड से बाहर के हिंदी से जुड़े विशेषज्ञ व्यक्तियों को आमंत्रित किया।



कोर्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 44वीं बैठक



कोर्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 44वीं बैठक 22 अगस्त 2022 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में संपन्न हुई। डॉ. के. एन. राघवन, आई. आर. एस., अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का प्रतिनिधित्व नहीं रहा। स्वागत भाषण के बाद बैठक में उपस्थित सदस्यों/अधिकारियों ने अपना परिचय दिया। तदुपरांत डॉ. के. एन. राघवन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि हम कोविड महामारी के दो सालों की गंभीर स्थिति के बाद ऑनलाइन बैठक से मुक्त होकर एकसाथ आए हैं। खुशी की बात है कि फिर से हमें आपस में मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। हमें आगे भी राजभाषा के उन्नयन के लिए मिलकर कार्य करना है। बैठक के दौरान सदस्य सचिव ने विविध कार्यालयों

से प्राप्त अर्ध वार्षिक रिपोर्टों की समीक्षा की तथा आवश्यक सुझाव दिए।

सदस्य सचिव ने 43 वीं बैठक के निर्णयों पर की गई कार्रवाई की रिपोर्ट पेश की। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से याने राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि की अनुपस्थिति में सदस्य सचिव ने अर्ध वार्षिक रिपोर्टों की पुनरीक्षा की। रिपोर्टों का अवलोकन करते हुए सदस्य सचिव ने सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों में दर्शाये गये आंकड़ों की जांच की तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दृष्टि से हुई कमियों को सुधारने के लिए मार्गदर्शन भी दिये। सदस्य सचिव ने प्रत्येक कार्यालय की रिपोर्टों का मदवार विश्लेषण करके सुझाव दिए।

श्री राकेश चौरसिया, उप प्रबंधक (रा. भा.), भारतीय स्टेट बैंक ने कृतज्ञता ज्ञापित की। अपराह्न 5.15 बजे बैठक समाप्त हुई।

त्रिपुरा के रबड़ पौधे केरल की मिट्टी में

केरल से लाए गए रबड़ के बीजों का इस्तेमाल करके पहली बार त्रिपुरा में रबड़ खेती शुरू की थी। इस साल जलवायु परिवर्तन के कारण केरल में रबड़ के बीजों की उपलब्धता कम थी इसलिए त्रिपुरा से रबड़ के बीज केरल लाये गये। त्रिपुरा के बागानों में उत्पादित रबड़ के बीजों की उपयोग क्षमता से संबंधित है यह लेख।

‘एन.ई. मित्रा’ नामक रबड़ कृषि विकास परियोजना के हिस्से के रूप में केरल से उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ के बड़ड़ पौधे और कप पौधे भेजे गए थे, जो एक बड़ी खबर थी। लेकिन, इस वर्ष केरल की पौधशालाओं में रबड़ के पौधे उपलब्ध नहीं होने की विशेष परिस्थिति में, उत्तर पूर्वी राज्य त्रिपुरा से अच्छी गुणवत्ता वाले रबड़ के बीज केरल में सफलतापूर्वक लाए गए, बहुत से लोग यह खबर नहीं जाने होंगे।

फूल और फल

रबड़ में प्राकृतिक शीतकालीन पतझड़ के बाद, छोटे तनों से नई पत्तियाँ और आगे फूल

उगते हैं। फूलों से निकलने वाले फल के बाहरी छिलके फूटकर खुल जाता है और बीज बगीचे में गिर जाते हैं। बरसाती मौसम में धूप वाले दिनों में बागानों से बीजों के फटने की आवाज सुन सकती है। पारंपरिक रबड़ क्षेत्रों में बीज जुलाई से सितंबर तक उपलब्ध होते हैं।

रबड़ के बीज

रबड़ के वृक्षों के फलों में तीन-तीन बीज पाए जाते हैं। फलों के बाहरी छिलके और बीज का उच्च आर्थिक मूल्य होता है। धूमघर और घरों में जलाऊ लकड़ी के बजाय छिलके को एकत्रित किया जाता है और उसका उपयोग किया जाता है। इसके अलावा हस्तशिल्प बनाने



के लिए भी बीज और फलों का उपयोग किया जाता है। बीजों में एक तैलीय अखरोट होता है। बीज के वजन का लगभग 63 प्रतिशत अखरोट है और 37 प्रतिशत बाहरी आवरण है। सूखे मेवों में करीब 47 फीसदी तेल मौजूद होता है। बीज से निकाले गए तेल का उपयोग चमड़े के चिकनापन के लिए, पेंट आदि बनाने के लिए किया जाता है। तेल निकालने के बाद प्राप्त खली को चारे में डाला जाता है।

बीज की संरचना और उत्पादन

आम तौर पर, रबड़ बीज का वजन चार से छः ग्राम के बीच होता है। लेकिन आरआरआईआई 414 श्रेणी के बीजों को 9 ग्राम तक वजन दर्ज किया है। एक किलोग्राम बीज में लगभग 200 से 250 बीज पाए जाते हैं। बीज के आकार, मोटाई, और छिलके के निशान देखकर रबड़ के किस्म को पहचाना जा सकता है। परिपक्व वृक्षों के एक हेक्टेयर बागान में लगभग 150 किलोग्राम बीज प्राप्त होने का अनुमान लगाया गया है। सर्दी का मौसम, गर्मी का मौसम और मानसून में उतार-चढ़ाव सीधे बीज उत्पादन को प्रभावित करते हैं।

उपयोग

बीजों का मुख्य उपयोग नए पौधों को

तैयार करना है। बीज से अंकुरित पौधों में बड्डिंग करके रबड़ के विविध प्रकार की रोपण सामग्रियों का (बड्ड पौधे, पॉलिबैग पौधे, कप पौधे आदि) उत्पादन करते हैं। स्वस्थ पौधों पर बड्डिंग करने से ही बड्डिंग की सफलता की दर और उसके बाद के विकास तेज हो सकता है। इसीलिए रबड़ के मामले में 'बीज अच्छा है तो फल अच्छा' वाली कहावत भी प्रासंगिक है। फटे हुए बीजों की अंकुरण क्षमता 2-3 दिन में ही समाप्त हो जाती है, अतः इन्हें तुरंत एकत्र कर अंकुरित कर देना चाहिए। बीजों में नमी का कम होना अंकुरण क्षमता में कमी का कारण है।

तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में कुलशेखरम और उसके आसपास में क्लोनीय वृक्षों के कई बागान हैं। वहीं से पारंपरिक क्षेत्रों के लिए आवश्यक बीजों का संग्रहण होता है। उन जगहों में रोग का प्रकोप कम होता है तथा जलवायु अनुकूल होती है। न केवल बीज उपलब्ध है बल्कि श्रमिक भी पर्याप्त उपलब्ध हैं। केरल में ज्यादातर आर आर आई आई 105 किस्म की खेती की गयी है। उनका बीज उत्पादन कम होने के कारण यहां की पौधशालाओं के लिए बीज कुलशेखरम से लाना पड़ता है।

विशेष स्थिति

इस वर्ष के जलवायु परिवर्तन और मजबूत मानसून के कारण पारंपरिक क्षेत्र में हर जगह बीज उत्पादन में काफी कमी आई है। रोग के कारण फल सड़ जाते हैं। बारिश के कारण बीज संग्रहण बहुत प्रभावी नहीं था। इसलिए, केरल में रबड़ बोर्ड पौधशालाओं को पर्याप्त गुणवत्ता वाले बीज नहीं मिले। उत्तर पूर्वी राज्यों में लागू एन.ई. मित्रा रबड़ कृषि विकास योजना की संभाव्यता को पहचानकर केरल और अन्य राज्यों में निजी पौधशालाओं के विस्तार ने बीजों की आवश्यकता को बढ़ाया है। इसलिए एक किलो रबड़ के बीज की कीमत 200 रुपए तक पहुंच गई है। इस साल की अधिक कीमत और बीज की अनुपलब्धता आदि की बजह से हमने दूसरे राज्यों से बीज आयात करने के बारे में सोचा।

त्रिपुरा क्यों?

रबड़ उत्पादन और कृषि क्षेत्र के विस्तार में त्रिपुरा भारत में दूसरे स्थान पर है। 2021-22 के आँकड़ों के अनुसार, कुल 88965 हेक्टेयर रबड़ की खेती के तहत, 60400 हेक्टेयर टाप करने वाले बागान हैं। पिछले साल कुल उत्पादन 79730 मेट्रिक टन था। भले ही त्रिपुरा में तीन महीने तक सर्दी रहती है भूप्रकृति केरल के समान है। 1963 में त्रिपुरा में पहली बार रबड़ की खेती शुरू हुई थी। कहा जाता है कि कुलशेखरम से लाए टी जे आई आर 1 किस्म के बीज इसके लिए इस्तेमाल किया गया था। वन भूमि में आग लगाने के बाद धान और अन्य फसलों की खेती की 'जुमिंग' पद्धति के कारण वन क्षेत्रों में मिट्टी का बहाव आम था। इसे रोकने के लिए राज्य के वन विभाग ने रबड़ बोर्ड की मदद से रबड़ की खेती शुरू की थी। त्रिपुरा से लाए गए बीजों का उपयोग करके केरल में 'म्यूकुणा' नामक लोबिये का प्रचार किया गया था।

त्रिपुरा में आमतौर पर रबड़ को कवक रोग पीडा कम है। इसलिए बीज की उपलब्धता भी बढ़ जाती है। काफी संख्या में श्रमिक भी उपलब्ध है। निजी पौधशालाएं काफी संख्या में होने की बजह से बीज संग्रहण लगातार होता है। इसी वजह से वहां के लोग गुणवत्ता वाले रबड़ बीज संग्रहण से बहुत परिचित हैं। बीजों को अक्सर स्टोर करके पड़ोसी राज्य असम भेज दिया जाता है। त्रिपुरा में अधिकतर आरआरआईआई 600 प्रजाति के रबड़ के पेड़ हैं। हालाँकि इस प्रजाति के बीज आम तौर पर आकार में छोटे होते हैं, लेकिन पौद कम जोरदार नहीं होते हैं। यहां के बागानों में अगस्त के महीने से बीज गिरने लगते हैं। इन सभी अनुकूल कारकों को ध्यान में रखते हुए, केरल के लिए त्रिपुरा से बीज एकत्र करने का निर्णय लिया गया।

भंडारण का तरीका

केरल की क्षेत्रीय पौधशालाओं के लिए अपेक्षित 2 मेट्रिक टन रबड़ बीज त्रिपुरा से खरीदने का निर्णय लिया गया था। मजदूर बिना किसी लाभ के उद्देश्य से बीज एकत्र किये थे इसलिए केवल वास्तविक मजदूरी ही खर्च हुई थी। इसलिए बीज तकरीबन कम कीमत पर उपलब्ध कराया जा सकता है। अर्गर्तला स्थित रबड़ बोर्ड कंपनी, मणिमलयार रबेर्स के कार्यालय ने इस उद्देश्य के लिए सेवाएं प्रदत्त की थी। कंपनी के अधीन काम कर रहे लगभग 25 'प्रवर्तित' पौधशालाओं और चयनित रबड़ उत्पादक संघों के माध्यम से खरीद की गई थी।

स्वस्थ पेड़ों से रबड़ के बीज एकत्र किए गए। भंडारित बीजों की गुणवत्ता सुनिश्चित की गयी थी। केवल चमकीले खोल वाले बीज, स्पष्ट निशान और हाथ में लेने पर भारी महसूस होने वाले बीज ही एकत्रित किए गए थे। कम वजन वाले या क्षतिग्रस्त बीजों को उसी समय हटाया गया था।



पैकिंग का तरीका

प्रतिदिन एकत्रित किए गए बीजों की गुणवत्ता सुनिश्चित करके भंडारण करने की रीति अपनाई थी। इसके लिए केंद्रीकृत गोदाम में लाए गए बीजों को गीले चारकोल पाउडर में मिलाकर जूट की बोरियों में भर दिया गया। व्यवस्था इस तरह की थी कि एक बोरी में 30 किलो बीज हो। बीजों की नमी के नुकसान रोकने के लिए प्रत्येक बोरे में 6-7 किलो गीला चारकोल पाउडर बीज के साथ मिलाया गया था। बोरों को जूट के रेशों से सिल दिया गया। इस तरह 400 जूट बैग (12 मेट्रिक टन बीज) केरल में भेजा गया था।

बीज भेजने की प्रक्रिया

बीज की थैलियों को ध्यानपूर्वक लॉरी में रखने के बाद, धूप से बचाने के लिए सावधानी से असम के सिलचर रेलवे स्टेशन पर पहुंचाया गया था। वहां से बीज ट्रेन से तिरुनंतपुरम पहुंचाये गये। बीज की थैलियों को यथासमय

रबड़ बोर्ड के मुक्कडा में स्थित केंद्रीय पौधशाला में और अन्य प्रादेशिक पौधशालाओं में पहुंचा सका।

प्रभावशीलता

बीजों को धोकर चारकोल का अंश पूरी तरह से हटाने के बाद, बीज पौधशालाओं की क्यारियों में बोये गये। बीज हमेशा की तरह अंकुरित होने लगे। सभी पौधशालाओं में 70 प्रतिशत से अधिक बीज निर्धारित समय में अंकुरित हो गए। पौधे तुरंत पौधशाला में रोपित किया गया। जैसा कि यह उद्यम सफल रहा है, यह साबित हो गया है कि, रबड़ के बीजों की खरीद और विपणन के क्षेत्र में त्रिपुरा की संभाव्यता का अच्छी तरह उपयोग किया जा सकता है।

परंपरागत क्षेत्र से बीज लाकर खेती शुरू करने वाले त्रिपुरा के किसान करीब 60 साल बाद पारंपरिक क्षेत्र में बीज वापस भेजने में सक्षम होने पर गर्व महसूस कर रहे हैं।

राष्ट्र का विकास और भ्रष्टाचार



रमा जी नायर
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
मुख्यालय



सर्व कानून बनाओ, भ्रष्टाचार का नामो निशान मिटाओ

सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई संस्कृति का हिस्सा होनी चाहिए। उन्हें मूलभूत मूल्यों के रूप में मान लेना चाहिए।

भ्रष्टाचार एक वैश्विक परिघटना है और यह अमीर देशों की तुलना में गरीब देशों को अधिक प्रभावित करते हुए पाया गया। यह आर्थिक विकास को रोकता है और सड़कों, स्कूलों और अस्पतालों जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के निवेश से बेहद जरूरी धन को हटाता है और अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों को रोकता है।

भ्रष्टाचार का देश के आर्थिक प्रदर्शन पर भी अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाले कई कारकों जैसे कि निवेश, कराधान, सार्वजनिक व्यय की संरचना और प्रभावशीलता को प्रभावित करता

है, जिससे संसाधनों का गलत आबंटन होता है। भ्रष्टाचार दैनिक जीवन में देखा जा सकता है। यह कानून के शासन और लोकतांत्रिक मूल्यों के कार्यान्वयन को प्रभावित करता है।

उच्च स्तर के भ्रष्टाचार से प्रभावित अर्थव्यवस्थाएँ कम स्तर के भ्रष्टाचार वाली अर्थव्यवस्थाओं की तरह पूरी तरह से समृद्ध होने में सक्षम नहीं हैं। भ्रष्ट अर्थव्यवस्था ठीक से काम नहीं कर पाती क्योंकि भ्रष्टाचार अर्थव्यवस्था के प्राकृतिक नियमों को रोकता है। भ्रष्टाचार धन के असमान वितरण का कारण बन सकता है क्योंकि छोटे व्यवसायों को अवैध संपर्क वाली बड़ी कंपनियों से अनुचित प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। एक भ्रष्ट अर्थव्यवस्था के तहत शिक्षा और स्वास्थ्य संरक्षण की गुणवत्ता भी बिगड़ती है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यू एन सी ए सी) दिसंबर 2005 में लागू हुआ और कई सदस्य देशों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है। यह भ्रष्टाचार से लड़ने का एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय कानूनी साधन है। सम्मेलन राष्ट्रों को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने, तकनीकी सहायता में सुधार करने और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए भ्रष्टाचार को रोकने और भ्रष्टाचार को अपराधीकरण करने के लिए बाध्य करता है।

जहां देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करने में व्यक्तिगत प्रयास काम कर सकते हैं, वहीं अगर समस्या को जड़ से खत्म करना है तो सरकारी हस्तक्षेप जरूरी है। जहां संस्थागत कमजोरियों के अन्य रूप हैं, जैसे कि राजनीतिक अस्थिरता, नौकरशाही लालफीताशाही और कमजोर

विधायी और न्यायिक प्रणाली हैं वहां भ्रष्टाचार सबसे अधिक प्रचलित है। महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि भ्रष्टाचार और संस्थागत कमजोरियां आपस में जुड़ी हुई हैं। इसलिए भ्रष्टाचार से छुटकारा पाने से देश को संस्थागत कमजोरी दूर करने में मदद मिलती है और इसके विपरीत भी होता है। एक देश के विकास के लिए, आर्थिक और संस्थागत सुधारों के माध्यम से इसे जन्म देने वाले मूल कारणों से निपटकर भ्रष्टाचार को रोकने पर जोर दिया जाना चाहिए। केवल एक देश में लाए गए सुधारों के कारण भ्रष्टाचार नहीं मिटेगा। लेकिन सुधार इसके प्रतिकूल परिणामों को नियंत्रण में लाएंगे और कम करेंगे इससे देश एक आधुनिक विकसित राष्ट्र बनने के अपने प्रयासों के साथ आगे बढ़ सकते हैं।



सूजी के लड्डू



आवश्यक सामग्री

1. सूजी 2 कप
2. चीनी पाउडर
3. बादाम या काजू
4. दूध
5. सूखा नारियल
6. देसी घी

सूजी के लड्डू कैसे बनाएं?

सूजी के लड्डू बनाने के लिए आप सबसे पहले एक कढ़ाई में घी डाल कर गर्म करें। फिर

आप इसमें सूजी डालें और धीमी आंच पर भून लें। इसके बाद आप इसमें सूखे नारियल डालें। फिर आप इसमें बारीक कटे बादाम, काजू और पसंदीदा ड्राई फ्रूट्स डालें। इसके बाद आप इन सारी चीजों को अच्छी तरह से लगातार चलाते हुए लें। फिर आप इसमें बूरा या पिसी हुई चीनी डालकर अच्छी तरह से मिला लें। इसके बाद आप इसमें दूध डालकर अच्छी तरह से मिलाकर गैस को बंद कर दें। अगर आप चाहें तो इसमें इलायची पाउडर भी डाल सकते हैं। फिर आप इस मिक्चर को थोड़ी देर के लिए ठंडा होने के लिए छोड़ दें। इसके बाद आप इसके मीडियम साइज के लड्डू बनाकर तैयार कर लें। फिर आप लड्डू बारीक कटी मेवा या बादाम या केसर से गार्निश करके सर्व करें।

सेवानिवृत्तियां

जुलाई 2022



डॉ. राजगोपाल आर
वैज्ञानिक डी



के जी सतीश कुमार,
उप निदेशक (प्र व ज सं)



रमादेवी बी के
अनुभाग अधिकारी



तंकचन पी पी
अनुभाग अधिकारी



सुरेश बाबु के
विपणन अधिकारी



वल्सम्मा मात्यु
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी



अम्मालकुट्टी पी जे
अनुभाग अधिकारी



एस एन सोमकुमार
अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर



पी देवप्पा बैरा
सुरक्षा गार्ड



के जी जयप्रकाश
क्षेत्रीय परिचर

अक्तूबर 2022



सुदीपकुमार चक्रवर्ती
विकास अधिकारी



सुधन चंद्र नाथ
सहायक विकास अधिकारी



तपन चक्रवर्ती
क्षेत्रीय अधिकारी



पार्वती एम पी
अनुभाग अधिकारी

नवंबर 2022



करुप्पसामी एम
कनिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी



राजप्पन टी पी
वरिष्ठ अभिलेखपाल/
प्रयोगशाला परिचर



पापड़ी पॉल
सहायक विकास अधिकारी

दिसंबर 2022



रतीष कुमार पी के
विकास अधिकारी



अनिता आचार्यी
अभिलेखपाल/प्रयोगशाला
परिचर



मोहन जॉर्ज
परिचर



1. भारतीय भाषा परिवार की भाषाओं का मूल स्रोत कौन सी भाषा है?
(क) हिंदी (ख) वैदिक संस्कृत (ग) मराठी (घ) लौकिक संस्कृत
2. हिंदी को भारतीय संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में कब स्वीकार किया?
(क) 14 सितंबर, 1949
(ख) 14 सितंबर, 1948 (ग) 14 सितंबर, 1953 (घ) 14 सितंबर, 1950
3. संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है?
(क) अनुच्छेद 343 (ख) अनुच्छेद 346
(ग) अनुच्छेद 344 (घ) अनुच्छेद 342
4. लिपि के विकास-क्रम में पहली लिपि कौन सी है?
(क) भावमूलक लिपि (ख) सूत्र लिपि
(ग) चित्र लिपि (घ) प्रतीकात्मक लिपि
5. देवनागरी लिपि में हिंदी के अतिरिक्त और कौन सी भाषा लिखी जाती है?
(क) तमिल (ख) बँगला (ग) पंजाबी (घ) मराठी
6. इनमें से हिंदीतर भाषी राज्य कौन सा है?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) मध्य प्रदेश
(ग) बिहार (घ) महाराष्ट्र
7. भाषा के संदर्भ में महात्मा गांधी ने किसका समर्थन किया?
(क) हिंदी (ख) हिंदुस्तानी (ग) हिंदुई
(घ) उर्दू
8. अपभ्रंश के प्रथम महाकवि कौन थे?
(क) हेमचंद्र (ख) स्वयंभू (ग) जोइंदु
(घ) रामचंद्र
9. राजभाषा अधिनियम कब पारित किया गया था?
(क) सन् 1963 (ख) सन् 1961
(ग) सन् 1964 (घ) सन् 1962
10. किस शताब्दी को हिंदी का प्रचार युग कहा जाता है?
(क) बीसवीं शताब्दी (ख) अठारहवीं शताब्दी (ग) उन्नीसवीं शताब्दी
(घ) सत्रहवीं शताब्दी

उत्तर

- 1.(ख), 2.(क), 3.(क), 4.(ग), 5.(घ),
6.(घ), 7.(ख), 8.(ख), 9.(क), 10.(ग)

हिंदी दिवस समारोह

प्रादेशिक कार्यालय कांजिरप्पल्ली में 29 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, अध्यापिका, मुस्लिम गर्ल्स हाई स्कूल, ईराट्टुपेट्टा प्रतियोगिताओं में निर्णायक और मुख्य अतिथि रही। श्री सुनिलकुमार पी जी, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - मरियाम्मा वी के, अ. अधिकारी
द्वितीय - के आर प्रसन्नकुमारी, सहायक
तृतीय - जैस्मिन तोम्सन, क्षे. अधिकारी



II. भाषण

- प्रथम - बिनोय पी पी, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - जैस्मिन तोम्सन, क्षे. अधिकारी
तृतीय - जोय जोण, स.वि. अधिकारी

III. कवितापाठ

- प्रथम - जैस्मिन तोम्सन, क्षे. अधिकारी
द्वितीय - के आर प्रसन्नकुमारी, सहायक
तृतीय - सुनिल संतोष, र.टा. निदर्शक

IV. निबंध लेखन

- प्रथम - जैस्मिन तोम्सन, क्षे. अधिकारी
द्वितीय - मरियाम्मा वी के, अ. अधिकारी
तृतीय - के आर प्रसन्नकुमारी, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय तिरुवनंतपुरम में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्रीमती गीताकुमारी, सेवानिवृत्त प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - दिलीप सी एल, स.वि. अधिकारी
द्वितीय - बिंदु पी, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सुमा एम एस. क्षेत्रीय अधिकारी

II. भाषण

- प्रथम - दीपा सुकुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - सुरेशकुमार, स्टा.का. चालक (सा श्रे)
तृतीय - बिंदु पी, क्षेत्रीय अधिकारी

III. कवितापाठ

- प्रथम - दीपा सुकुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - बिंदु पी, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सुरेशकुमार, स्टा.का. चालक (सा श्रे)

आंचलिक कार्यालय, सिलचर में 1 दिसंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। कुमारी समरागनि भट्टाचारजी, हिंदी अध्यापिका, मातंगिनी हिंदी विद्यालय, सिलचर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही।



इस सिलसिले में पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. निबंध लेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - नारायण चंद्र दास, सर्वे. अधिकारी
द्वितीय - बिप्लव कांति देबनाथ, प्र. सहायक
तृतीय - लाइश राम यायफाबा, क्षे. अधिकारी

II. टिप्पण एवं आलेखन

- प्रथम - चिरंजीब बानिक, स.वि. अधिकारी
द्वितीय - आन्टणी के ए, अनु. अधिकारी
तृतीय - नयोशांग आर, स.वि. अधिकारी

III. कवितापाठ

- प्रथम - शोभना आर, स.वि. अधिकारी
द्वितीय - राहुल बर्मन, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय - दयाल कुमार लखार, र टा निदर्शक

IV. भाषण

- प्रथम - सनातन सेथी, प्र. अधिकारी
द्वितीय - जयश्री एम आर, .वि. अधिकारी
तृतीय - देबाशिष नाथ, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय अडूर में 28 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मिनी, हिंदी अध्यापिका, हॉली एंजल्स

हायर सेकंडरी स्कूल, अडूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री एम गोपालकृष्णन, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस सिलसिले में पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - अजिता के, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - षैनी रेजी, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - के जयलक्ष्मी, कनि. सहायक ग्रेड 1

II. भाषण

- प्रथम - के जी मनोज, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - षैनी रेजी, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - आदित्य सोमशेखरन पिल्लै, क.सहायक

III. कवितापाठ

- प्रथम - के जयलक्ष्मी, कनि. सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - के जी मनोज, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - राजीवकुमार आर, र.टा. निदर्शक

प्रादेशिक कार्यालय अंबासा में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री अजय कुमार पुंढीर, हिंदी अध्यापक केंद्रीय विद्यालय, अंबासा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती वी पी प्रेमलता, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस सिलसिले में पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी



दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - गिरिजा सी एस, अनु. अधिकारी
द्वितीय - अरुणा जोर्ज, स.वि. अधिकारी
तृतीय - शांता कर्माकर, क.सहायक ग्रेड 1

II. कवितापाठ

- प्रथम - शांता कर्माकर, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - पार्था देबनाथ, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - गिरिजा सी एस, अनु. अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तुरा में 13 अक्टूबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री राहुल कुमार तिवारी, हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, तुरा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री एन सली, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस सिलसिले में पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। प्रादेशिक कार्यालय, तुरा के अलावा प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, तुरा के पदधारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-



I. निबंध लेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - सोली जे ऑस्टिन, अनु. अधिकारी
द्वितीय - बीना जोसफ, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय - आशिष के कश्यप, क्षेत्रीय अधिकारी

II. टिप्पण एवं आलेखन

- प्रथम - आशिष के कश्यप, क्षेत्रीय अधिकारी

- द्वितीय - मुबषीरा बक्कर, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय - विनोब बाबु टी पी, स.विकास अधिकारी

III. कवितापाठ

- प्रथम - मुबषीरा बक्कर, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - एंजलव्यू एन मारक, स.वि.अधिकारी
तृतीय - बीना जोसफ, क.सहायक ग्रेड 1

IV. भाषण

- प्रथम - अनिल कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - रोहित रमेश, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - देबज्योति चक्रबर्ती, विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तलिपरंबा में 21 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती शैलजा एम, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, बी एड ट्रेनिंग कॉलेज, नीलेश्वरम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री रतीष कुमार पी के, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - उषा के, अनुभाग अधिकारी
द्वितीय - अजित प्रसाद वी,
प्र.विकास अधिकारी
तृतीय - राजु के टी, प्र.विकास अधिकारी

II. कवितापाठ

- प्रथम - रतीष कुमार पी के,
विकास अधिकारी
द्वितीय - गिरीष कुमार सी पी, सहायक
तृतीय - अजित प्रसाद वी,
प्र.विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय काजलगॉव में 27 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री संजय कुमार वर्मा, टीजीटी (हिंदी), विवेकानंद



तृतीय - गोपी रंजन दास गोस्वामी,
प्र.विकास अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - शुभम चक्रवर्ती, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - टिन्टु मोल एम, स. विकास
अधिकारी

तृतीय - गुटल बर्गेयारी, प्र.उप र उ आयुक्त

III. कवितापाठ

प्रथम - शुभम चक्रवर्ती, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - डॉ. प्रेम किशोर, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - कामदेव बसुमतारी, क.सहायक ग्रेड I

प्रादेशिक कार्यालय तलशेरी में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती बैनी पी पी, अध्यापिका, कडंबूर हाई स्कूल, कण्णूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री चंद्रन कराता, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं

केंद्रीय विद्यालय, काजलगाँव प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री गुटल बर्गेयारी, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने स्वागत भाषण किया। श्रीमती कमलाक्षी के के, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। डॉ. प्रेम किशोर, क्षेत्रीय अधिकारी ने हिंदी दिवस मनाने के महत्व के बारे में एक भाषण किया। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त एवं निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - डॉ. रिदिप चौधरी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - आतिरा अजित, क्षेत्रीय अधिकारी



को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - वर्षा टी एम, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - एम के विनिल, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सिबी मात्यु, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

- प्रथम - जयराजन पारायी,
स्टाफ कार चालक
द्वितीय - एम के विनिल, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - चंद्रन कराता, प्र.उप र उ आयुक्त

III. भाषण

- प्रथम - चंद्रन कराता, प्र.उप र उ आयुक्त
द्वितीय - जयराजन पारायी,
स्टाफ कार चालक
तृतीय - एम के विनिल, क्षेत्रीय अधिकारी



एनआरईटीसी अगर्तला में 26 एवं 28 सितंबर 2022 को एनआरईटीसी/प्रादेशिक कार्यालय/प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन अगर्तला के अधिकारियों/कर्मचारियों को मिलाकर हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री राम प्रकाश यादव, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, अगर्तला प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती षैलजा के, प्रभारी संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। डॉ. देबब्रत रॉय, प्रभारी अधिकारी, प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, अगर्तला ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। प्रभारी संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त एवं निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - चित्त रंजन देबनाथ, क.अभियंता (सिविल)
द्वितीय - मल्लिका अम्मा, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - राजु डे, कनिष्ठ सहायक

II. निबंध लेखन

- प्रथम - रंजित सरकार, इंस्ट्रुमेंट तकनीशियन
द्वितीय - मल्लिका अम्मा, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - राजु डे, कनिष्ठ सहायक

III. भाषण

- प्रथम - पार्था दास, रबड़ टापींग निदर्शक
द्वितीय - चित्त रंजन देबनाथ, क.अभियंता (सिविल)
तृतीय - शिशिर भद्रा, सर्वेक्षक

IV. कवितापाठ

- प्रथम - शिशिर भद्रा, सर्वेक्षक
द्वितीय - स्वप्ना रॉय, क.सहायक ग्रेड I
तृतीय - कृष्णधन साहा, अभिलेखपाल

V. हिंदी गीत

- प्रथम - मनोजित साहा, सहायक सचिव
द्वितीय - रंजित सरकार, इंस्ट्रुमेंट तकनीशियन
तृतीय - स्वप्ना दास, परिचर

प्रादेशिक कार्यालय पाला में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, एचएसए, मुस्लिम गर्ल्स हाई स्कूल, ईराट्टुपेट्टा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री जेडम्स वी सी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-



I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - मूर्षाद बीगम यू, क.सहायक ग्रेड I
द्वितीय - मिनिकुमारी, सहायक
तृतीय - डी रंजित, क्षेत्रीय अधिकारी

II. भाषण

- प्रथम - डी रंजित, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - मूर्षाद बीगम यू, क.सहायक ग्रेड I
तृतीय - डेयसी कुर्यन, सहायक

III. कवितापाठ

- प्रथम - डी रंजित, क्षेत्रीय अधिकारी

- द्वितीय - मूर्षाद बीगम यू, क.सहायक ग्रेड I
तृतीय - मेर्ली तोमस, क.सहायक ग्रेड I

प्रादेशिक कार्यालय विश्रामगंज में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री नंदन चक्रवर्ती, हिंदी अध्यापक, डॉन बोस्को स्कूल, विश्रामगंज प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक एवं प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-



I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - पापड़ी पोल, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - स्वपन चंद्र देबनाथ, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सतीश नागर, क्षेत्रीय अधिकारी

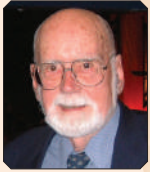
II. कवितापाठ

- प्रथम - संध्या देब, क.सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - पापड़ी पोल, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - स्वपन चंद्र देबनाथ, क्षेत्रीय अधिकारी



चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार

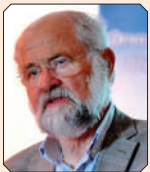
एडवर्ड डोनाल थामस



पुरस्कार वर्ष : 1990
जन्म : 15 मार्च, 1920
मृत्यु : 20 अक्तूबर 2012
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्हें अंगों के प्रत्यारोपण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करने के कारण 1990 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन्होंने सबसे पहले अस्थिमज्जा का प्रत्यारोपण 1956 में किया।

इर्विन नेहर



पुरस्कार वर्ष : 1991
जन्म : 20 मार्च 1944
राष्ट्रीयता : जर्मन

इर्विन नेहर को बर्ट सैकमान के साथ 1991 का नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन्होंने अपने कार्य से जीव विज्ञान की दिशा ही बदल दी। इन्होंने कोशिकाओं में एक-आयन चैनल का अध्ययन किया। इससे कोशिकाओं के मेकैनिज्म को समझने में सहायता मिली जो कि अनेक रोगों का कारण होता है।

बर्ट सैकमान



पुरस्कार वर्ष : 1991
जन्म : 12 जून 1942
राष्ट्रीयता : जर्मन

कोशिकाओं में एक-अणु चैनल का अध्ययन करने के कारण इन्हें 1991 का नोबेल पुरस्कार मिला। इनके कोशिकाओं के अध्ययन से जीव विज्ञान में क्रांतिकारी कार्य हुआ।

एडमण्ड एच. फिशर



पुरस्कार वर्ष : 1992
जन्म : 6 अप्रैल 1920
मृत्यु : 27 अगस्त 2021
राष्ट्रीयता : स्विस/अमरीकी

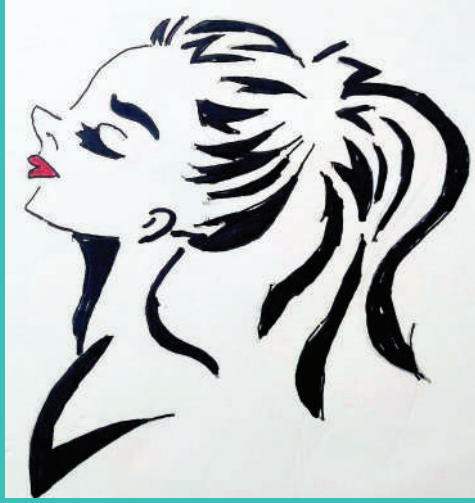
मि.फिशर का संबंध वार्शिंगटन विश्वविद्यालय से है। इन्होंने यह प्रक्रिया बताई कि किस प्रकार प्रोटीनों को रसायन के तौर पर किसी विशेष कार्य के लिए परिवर्तित किया जा सकता है। इससे वैज्ञानिकों को यह बात समझने में सहायता मिली कि कोशिकाओं को नियमित करने वाली प्रक्रिया में असंतुलन होने से रोग अलर्जी पैदा हो जाती है। इन्होंने बताया कि इससे कैंसर के उपचार में सहायता मिलेगी। इनका जन्म शंघाई में हुआ परंतु इन्हें स्विस और अमरीकी नागरिकताएं प्राप्त हैं।

एडविन जी. क्रेब्स



पुरस्कार वर्ष : 1992
जन्म : 6 जून 1918
मृत्यु : 21 दिसंबर 2009
राष्ट्रीयता : अमरीकी

डॉ.क्रेब्स 1992 के पुरस्कार के भागीदार थे। मि.फिशर और क्रेब्स ने मिलकर कार्य किया। इनके कार्य से कुछ ऐसी औषधियाँ बनने की संभावना है जिनसे कैंसर की बढ़ोत्तरी को रोका जा सके। फिशर और इन्होंने एक एन्जाइम को परिशुद्ध किया। इनका कहना है वह शरीर में गैस पैडल और ब्रेक पैडल की तरह काम करता है जिससे शारीरिक प्रतिक्रियाएं रुकती हैं।



चित्रकारी: **कुमारी देवना निष**
सुपुत्री श्री निषाद एम के
कनिष्ठ सहायक ग्रेड I मुख्यालय



अमृत बहाते भारत

सूर्य की रश्मि से प्रशोभित प्रभातों में,
चांद की शीतलता से हर्षित रातों में,
उच्च पर्वत श्रृंखलाओं की घाटियों में,
कलकल रव से बहते झरनों में,
मेरे प्यारे देश, तेरी खूबसूरती मैंने देखी।

उद्यान में कुसुमित फूलों की खूशबू में,
वनश्री फैलाते लताओं की मर्मरता में,
मीठी स्वर से गुनगुनाते चिड़ियों में,
धान समृद्ध हरियाली खेतों में,
मेरे प्यारे देश, तेरी खूबसूरती मैंने देखी।

बच्चों की मस्ती से भरित मैदानों में,
खेत में जोश से काम करते कृषकों में,
भिन्न भाषा बोले लोगों की आवाज़ों में
देश को जीवन अर्पित जवानों के मन की
ऊंचाई में,
मेरे प्यारे देश, तेरी खूबसूरती मैंने देखी।

आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते गर्व
भरे इस समय में
मेरे प्यारे देश, तेरी खूबसूरती दस गुना
बढ़ती हुई मैंने देखी।
मेरे प्यारे देश तुझे प्रणाम!

सिसिली पी एस
हिंदी सहायक, रबड़ बोर्ड,
मुख्यालय

